प्राकृत विद्या पाठ्यक्रम के अंतर्गत

पाइय सिक्खा

(प्राकृत शिक्षा)

भाग - 3

लेखक

मुनि प्रणम्यसागर

'जयउ जिणसासणं'

पागदभासामूला दिस्सदि ववहार भारदे देसे।
पादेसिगभासासुं अज्जवि सद्दा सुणिज्जंति।।1।।

माआए जा भासा सव्वेसिं हियए देदि सुहं।
णेहो सहजे जायदि परोप्परं भासमाणाणं।।2।।

भासा सद्दवियारो भासाए सव्वभावसब्भावो।
भासाए संकारो संकदिविण्णाणसुहसमायारो।।3।।

–धम्मकहा

प्राकृत भाषा मूल है। भारतदेश में इसका व्यवहार दिखाई देता है।
प्रादेशिक भाषाओं में आज भी प्राकृत के शब्द सुने जाते हैं।।1।।

माता की जो भाषा है वह सभी के हृदय में सुख देती है।
माँ की भाषा में परस्पर बोलने वालों में स्नेह सहज उत्पन्न होता है।।2।।

भाषा शब्द का विकार है, भाषा से ही सभी भावों का सद्‌भाव होता है, भाषा से ही संस्कार होता है, भाषा से ही संस्कृति, विज्ञान और सुख का आचरण होता है।



**प्राकृत हमारी दादी माँ है, संस्कृत हमारा पितामह है,
हिन्दी हमारी माँ है, अपभ्रंश हमारा पिता है,
अंग्रेजी हमारी पत्नी है।**

मुनि प्रणम्यसागर



प्राकृत पाठ्यक्रम के अंतर्गत

पाइय सिक्खा

(प्राकृत शिक्षा)

भाग-3

लेखक

मुनि श्री प्रणम्यसागर जी महाराज



प्रकाशक

आचार्य अकलंक देव जैन विद्या शोधालय समिति

109, शिवाजी पार्क, देवास रोड, उज्जैन (476010)

कृति
पाइय सिक्खा - भाग 3

आशीर्वाद
आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

कृतिकार
मुनि श्री प्रणम्यसागर जी महाराज

संयोजन
डॉ. अजेश जैन शास्त्री, रेवाड़ी

सहयोग
श्री ऋषभ जैन शास्त्री, रेवाड़ी

आवृति : **1000**

मूल्य : **30/-**

प्राप्ति स्थान :
डॉ. अजेश जैन शास्त्री, रेवाड़ी - 9416426659, 9784601548
शैलेन्द्र शाह, उज्जैन - 09425092483, 09406881001
आर्हत विद्या प्रकाशन, गोटेगांव - 09425837476

पुण्यार्जक :
श्री प्रद्युम्न जैन (सुपुत्र श्री विजेन्द्र जी जैन)
मै. जैन गारमेन्ट्स, एवरेस्ट सिनेमा हॉल, भाड़ावास रोड, रेवाड़ी-123401

मुद्रक
अजय प्रैस, काठ मण्डी, रेवाड़ी-123401
(हरियाणा) - 9416150911

पाइय सिक्खा

भाग 3

विषयानुक्रमणिका

आत्मकथ्य/पाथेय

जैन परम्परानुसार अवसर्पिणी काल के इस पंचम युग में जहाँ एक ओर भौतिक एवं वैज्ञानिक सम्पन्नता का दिग्दर्शन हो रहा है, वहीं अशान्त एवं आक्रान्त मानव समाज कर्त्तव्यों एवं मूल्यों से विमुख होता जा रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि समाज में मूल्यों की स्थापना हो, वैयक्तिक एवं आध्यात्मिक स्तर पर मानवता का विकास हो, अशांत समाज के लिए आर्षपुरुषों की वाणी का सदुपयोग करने का अवसर मिले। आज जिन-शासन में महावीर की देशना फलित हो रही है। उनकी वाणी आगम के रूप में विद्यमान है। हम सभी उस आगम रूप जिनवाणी का स्वाध्याय करके आत्मकल्याण कर सकें, यही मंगल कामना है।

आज महावीर की देशना जिन आगम ग्रन्थों के रूप में प्राप्त हो रही है उनका स्वाध्याय एवं अध्ययन भाषा की दुरूहता के कारण सम्भव नहीं है। प्राकृत भाषा में रचित इन आगमों के अध्ययन एवं स्वाध्याय के लिए प्राकृत भाषा की प्रारम्भिक जानकारी आवश्यक है। इसी उद्देश्य को लेकर **प्राकृत विद्या पाठ्यक्रम** का निर्माण किया गया है जो **प्राकृत शिक्षा के चार भागों** में पाठकों के हाथ में है। जिसके माध्यम से जनसामान्य एवं जिन-उपासकों के अन्दर भाषा की जानकारी के साथ-साथ स्वाध्याय की प्रवृत्ति बढ़ सकेगी। इसी उद्देश्य को लेकर सामाजिक स्तर पर, पारिवारिक स्तर पर और वैयक्तिक स्तर पर स्वाध्याय की रुचि जागृति की जा सके, जगह-जगह **प्राकृत विद्या पाठशाला** स्थापित की जा रही हैं। इस पाठशाला के निमित्त से प्राकृत भाषा की जानकारी के लिए रचित इस कृति में क्रमशः प्राकृत के संज्ञा-सर्वनाम शब्दों के विभक्ति रूप, क्रियापदों के धातुरूपों और प्राकृत के सामान्य नियमों की जानकारी तथा प्राकृत अभ्यास रचना के प्रयोग 'प्राकृत शिक्षा' में दिये गये हैं।

मंगल-कामना है कि समाज के सभी धर्मानुरागी श्रावक-श्राविकाएं इस पाठशाला में आकर इसे समृद्ध करें और अपने आपको स्वाध्याय की प्रवृत्ति से जोड़े रखें।

अस्तु मंगलभावना सहित.......

वर्षायोग - 2017
रेवाड़ी (हरियाणा)

- मुनि प्रणम्य सागर

प्राकृत भाषा का ऐतिहासिक परिचय

– **मुनि प्रणम्यसागर**

❖ भारत के प्राचीन ग्रन्थ प्राकृत भाषा में निबद्ध हैं। श्रमण परम्परा के पोषक वैदिक युगीन व्रात्य आदि प्राचीन प्राकृत का व्यवहार करते थे।

❖ वेद छान्दस् में लिखे गये हैं। उस समय जन सामान्य के बीच व्यवहार की भाषा का नाम प्राकृत कहा जाता था।

❖ श्रमण परम्परा के महापुरुष भगवान् महावीर ने भी अपने उपदेशों की भाषा जन–बोली प्राकृत को बनाया।

❖ गणधर और आचार्यों की परम्परा द्वारा स्मरण के आधार पर महावीर के उपदेशों को द्वादशांग श्रुत के रूप में प्राकृत में सुरक्षित रखा गया।

❖ उसी श्रुतांश को दक्षिण भारत के दिगम्बर जैनाचार्यों ने स्वतन्त्र ग्रन्थों की रचना कर और उसे ईसा की प्रथम शताब्दी में लिपिबद्ध कर सुरक्षित किया। दिगम्बर परम्परा के अनुसार ई.पू. प्रथम शताब्दी में गुणधराचार्य ने कसायपाहुड नामक ग्रन्थ की रचना शौरसैनी प्राकृत में 180 गाथा सूत्रों में की।

❖ आचार्य धरसेन की प्रेरणा से आचार्य पुष्पदन्त एवं मुनि श्री भूतबलि (ईसा के 73 से 87 वर्ष के लगभग) ने षट्खण्डागम नामक ग्रन्थ की शौरसैनी प्राकृत में रचना की और ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी (श्रुत पंचमी) को उसकी लिखित ताड़पत्रीय प्रति की संघ ने पूजा की। ग्रन्थलेखन का यह क्रम निरन्तर चलता रहा।

❖ यही शौरसैनी प्राकृत तब दक्षिण से उत्तर और पूर्व से पश्चिम तक सम्पर्क भाषा प्राकृत के रूप में प्रसिद्ध थी।

❖ श्वेताम्बर परम्परा में आगम साहित्य में अर्धमागधी प्राकृत का तथा परवर्ती धार्मिक कथा–ग्रन्थों और व्याख्या साहित्य के लिए महाराष्ट्री प्राकृत का प्रयोग किया गया है।

❖ दिगम्बर परम्परा ने धार्मिक कथा और काव्य ग्रन्थों के लिए प्राकृत से विकसित अपभ्रंश भाषा का प्रयोग किया।

❖ इस प्रकार भगवान् महावीर के बाद लगभग दो हजार वर्षों तक जैन ग्रन्थों के साथ शौरसैनी, अर्धमागधी, महाराष्ट्री आदि प्राकृतों का सम्बन्ध बना रहा है। प्राकृत जैन परम्परा की मूल भाषा है।

❖ जैनाचार्यों ने प्राकृत भाषा के साथ भारत की अन्य प्रायः सभी भाषाओं में अपना साहित्य लिखा है।

❖ प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति करते समय **'प्रकृत्या स्वभावेन सिद्धं प्राकृतम्'** अथवा **'प्रकृतीनां साधारणजनानामिदं प्राकृतम्'** अर्थ को स्वीकार करना चाहिये। जन सामान्य की स्वाभाविक भाषा प्राकृत है।

❖ प्राचीन विद्वान् नमिसाधु के अनुसार प्राकृत शब्द का अर्थ है–व्याकरण आदि संस्कारों से रहित लोगों का स्वाभाविक वचन–व्यापार। उससे उत्पन्न अथवा वही वचन–व्यापार प्राकृत है।

❖ प्राक्+कृत पद से प्राकृत शब्द बना है, जिसका अर्थ है पहिले किया गया। जैन धर्म के द्वादशांग ग्रन्थ पहिले किये गये हैं। अतः उनकी भाषा प्राकृत है, जो बालक, महिला आदि सभी को सुबोध है।

❖ प्राकृत के देश–भेद एवं संस्कारित होने के अवान्तर विभेद हुए हैं। यथा–शौरसेनी, अर्धमागधी, महाराष्ट्री, मागधी, अपभ्रंश आदि।

❖ आठवीं शताब्दी के कवि वाक्पतिराज ने कहा है कि–सभी भाषाएँ इसी (जनबोली प्राकृत) से निकलती हैं और इसी को प्राप्त होती हैं। जैसे जल बादल के रूप में समुद्र से निकलता है और समुद्र में ही नदियों के रूप में आ जाता है। यथा–

सयलाओइ मंव ाया बसन्तिए त्तोय ण ोन्तिव ायाओ।
एन्तिस मुद्दं च्चियण ोन्तिस ायराओ च्चियज लाइं।।

❖ महावीर और बुद्ध ने जनता के सांस्कृतिक उत्थान के लिए प्राकृत भाषा का आश्रय लिया, जिसके परिणाम स्वरूप दार्शनिक, आध्यात्मिक, सामाजिक आदि विविधताओं से परिपूर्ण आगमिक एवं त्रिपिटक साहित्य के निर्माण की प्रेरणा मिली।

❖ महापुरुषों ने प्राकृत भाषा के माध्यम से तत्कालीन समाज के विभिन्न क्षेत्रों में क्रान्ति की ध्वजा लहरायी थी। प्राचीन भारत में प्राकृत मातृभाषा के रूप में दूर–दूर के विशाल जन समुदाय को आकर्षित करती थी।

❖ विद्वानों ने कहा है कि जिस प्रकार वैदिक भाषा को आर्य संस्कृति की भाषा होने का गौरव प्राप्त है, उसी प्रकार प्राकृत भाषा को **आगम भाषा/आर्य भाषा** होने की प्रतिष्ठा प्राप्त है।

❖ सम्राट अशोक के समय में प्राकृत जन–भाषा के रूप में इतनी प्रतिष्ठित थी कि उसे **राज्यभाषा** होने का गौरव भी प्राप्त हुआ है। ई.पू. 300 से लेकर 400 ईस्वी तक इन सात सौ वर्षों में लगभग दो हजार अभिलेख प्राकृत में लिखे गये हैं।

❖ खारबेल द्वारा हाथी गुम्फा में प्राकृत एवं ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण शिलालेख में अपने देश भारत वर्ष का नाम **'भरध-वस'** सर्वप्रथम प्राचीनतम उल्लेख के रूप में मिलता है।

❖ वैदिक युग में प्राकृत भाषा लोकभाषा थी। उसमें रूपों की बहुलता एवं सरलीकरण की प्रवृत्ति थी। महावीर युग तक आते–आते प्राकृत ने अपने को इतना समृद्ध और सहज किया कि वह अध्यात्म और सदाचार की भाषा बन सकी।

❖ साहित्य भाषा के रूप में महाकवि हाल ने प्रथम सदी में प्राकृत भाषा के कवियों की गाथाओं का गाथाकोश (गाथासप्तशती) तैयार किया, जो ग्रामीण जीवन और सौन्दर्य–चेतना की प्रतिनिधि ग्रन्थ है।

❖ प्राकृत भाषा के इस जनाकर्षण के कारण कालिदास आदि महाकवियों ने अपने नाटक ग्रन्थों में प्राकृत भाषा बोलने वाले पात्रों को प्रमुख स्थान दिया। इससे स्पष्ट है कि समाज में अधिकांश लोग दैनिक जीवन में प्राकृत भाषा का प्रयोग करते थे।

❖ अभिज्ञानशाकुन्तलं की ऋषिकन्या शकुन्तला, नाटककार भास की राजकुमारी वासवदत्ता, शूद्रक की नगरवधू वसन्तसेना तथा प्रायः सभी नाटकों में राजा के मित्र, कर्मचारी आदि पात्र प्राकृत भाषा का प्रयोग करते देखे जाते हैं। इससे स्पष्ट है कि प्राकृत जनसमुदाय की भाषा के रूप में प्रतिष्ठित थी।

❖ नाटकों में स्त्रियाँ शौरसैनी प्राकृत में ही बात करती हैं। महाकवि शूद्रककृत 'मृच्छकटिकम्' नाटक में विदूषक कहता है– दो वस्तुयें हास्य उत्पन्न करती हैं। प्रथम वस्तु–स्त्री के द्वारा संस्कृत भाषा का प्रयोग तथा दूसरी वस्तु–पुरुष द्वारा धीमें स्वर में गायन।

- ❖ प्राकृत में जो आगम ग्रन्थ, व्याख्या साहित्य, कथा एवं चरितग्रन्थ आदि लिखे गये है उनमें काव्यात्मक सौन्दर्य और मधुर रसात्मकता का समावेश है।
- ❖ काव्य की प्रायः सभी विधाओं–महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तककाव्य, चरित, कथा आदि को प्राकृत भाषा ने समृद्ध किया है।
- ❖ अनेक प्राकृत रचनाएँ अजैन कवियों/विद्वानों द्वारा लिखी गयी हैं।
- ❖ प्राकृत एवं अपभ्रंश की लाखों पाण्डुलिपियाँ देश के ग्रन्थभण्डारों में सुरक्षित हैं, जो देश की धरोहर हैं।
- ❖ प्राकृत भाषा की मधुरता और काव्यात्मकता का प्रभाव है कि भारतीय काव्यशास्त्रियों ने काव्य के अपने लक्षण–ग्रन्थों में प्राकृत की सैंकड़ों गाथाओं के उद्धरण दिये हैं। देश के अनेक सुभाषितों को उन्होंने इस बहाने सुरक्षित किया है।
- ❖ डॉ. पी. डी. गुणे ने स्वीकार किया है कि प्राकृतों का अस्तित्व वैदिक बोलियों के साथ–साथ विद्यमान था। उन्हीं से परावर्ती साहित्यिक भाषाओं का विकास हुआ है।
- ❖ डॉ. हरदेव बाहरी ने अपनी पुस्तक– **'प्राकृत भाषा और उसका साहित्य'** में कहा है कि वेद कालीन प्राकृतों से संस्कृत और विभिन्न प्राकृतों का विकास हुआ है।
- ❖ डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने तृतीय युगीन प्राकृत अपभ्रंश को प्राचीन हिन्दी कहा है। यह अपभ्रंश आधुनिक भाषाओं को जोड़ने वाली कड़ी है।
- ❖ 'हिन्दी' जिस भाषा के विशिष्ट दैशिक और कालिक रूप का नाम है, भारत में इसका प्राचीनतम रूप प्राकृत है।
- ❖ आधुनिक युग में प्राकृत भाषाओं का व्याकरण लिखने वाले जर्मन विद्वान् हैं– डॉ. पिशेल, इससे जर्मनी में प्राकृत अध्ययन खूब विकसित हुआ।
- ❖ प्राकृत कवि के ये उद्गार प्रेरणादायक हैं कि–''प्राकृत काव्य के लिये नमस्कार है और उनके लिए भी जिनके द्वारा प्राकृत काव्य रचा गया है। उनको भी हम नमस्कार करते हैं, जो प्राकृत काव्य को पढ़कर उसे हृदयंगम करते हैं''। यथा–

पाइयकव्वस्सन मो,प ाइयकव्वंच ािनम्मियंज`ण।
ताहं ाचियप णमामो,प ढिऊणय ज`ाविय ाणन्ति।।

- ❖ आचार्य राजशेखर ने कर्पूरमंजरी को शौरसैनी प्राकृत में लिखा और उसमें कहा है कि संस्कृत के काव्य पुरुषों की तरह कठोर एवं प्राकृत के काव्य महिलाओं की तरह कोमल भाषा वाले हैं।
- ❖ प्राकृत भाषा का अध्ययन न केवल भारत देश में अपितु विदेशों में भी हो रहा है। आज भी **SOAS लंदन यूनिवर्सिटी** में प्राकृत भाषा का अध्ययन कराया जाता है।
- ❖ ऐसी भारतीय भाषाओं की आधारभूत जन भाषा प्राकृत एवं उसके साहित्य के संरक्षण, शिक्षण, शोध एवं प्रचार–प्रसार के लिए प्रत्येक देशवासी, संस्था, सरकार, नेता, समाजसेवी, शिक्षक को सक्रिय सहयोग एवं संबल प्रदान करना चाहिये।

मंगलाचरण

णमो अरहंताणं

णमो सिद्धाणं

णमो आइरियाणं

णमो उवज्झायाणं

णमो लोए सव्वसाहूणं

चत्तारि मंगलं अरहंत मंगलं
सिद्ध मंगलं साहू मंगलं
केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं ।।
चत्तारि लोगुत्तमा अरहंत लोगुत्तमा
सिद्ध लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा
केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा ।।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि
अरहंत सरणं पव्वज्जामि
सिद्ध सरणं पव्वज्जामि
साहू सरणं पव्वज्जामि
केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पव्वज्जामि ।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ मंगलं।।

पाठ-1

सरवेंजण (स्वर-व्यंजन)

प्राकृत में व्यंजनों की संख्या 29 है-

क वर्ग - क, ख, ग, घ

च वर्ग - च, छ, ज, झ

ट वर्ग - ट, ठ, ड, ढ, ण

त वर्ग - त, थ, द, ध, न

प वर्ग - प, फ, ब, भ, म

अन्तस्थ - य, र, ल, व

ऊष्माक्षर - स, ह।

❖ प्राकृत में कुल 10 स्वर होते हैं। जिनमें पाँच ह्रस्व स्वर होते हैं और पाँच दीर्घ स्वर होते हैं।

1. ह्रस्व स्वर - अ, इ, उ, ए, ओ

2. दीर्घ स्वर - आ, ई, ऊ, ए ओ इस प्रकार आपने देखा कि ऐ, औ स्वर भी ए और ओ के रूप में ही अभिव्यक्त होते हैं।

प्रयोग- बच्चों! देखो! बोली भाषा में भी हम लोग सामान्यत: इन स्वरों का प्रयोग नहीं करते हैं। इसलिए प्राकृत पहले बोली भाषा के रूप में प्रचलित थी और यह जन सामान्य की भाषा थी। जैसे-कैलास, ऐरावत, ऐनक, शैल। सामान्य रूप से हम बोलते हैं-केलास या कइलास बस यही प्राकृत भाषा है। इसी तरह एरावत या अइरावत, एनक या अइनक, सेल या सइल।

बोलो - यौवन, बोलने में आएगा-योवन, यही प्राकृत है।

❖ प्राकृत वर्णमाला में ङ एवं ञ् का स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता है। ये व्यंजन अपने वर्ग के व्यंजनों के साथ अनुस्वार (ं) के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

❖ प्राकृत में 'श' एवं 'ष' के स्थान पर 'स' का ही प्रयोग होता है। जैसे-सुरेश-सुरेस, मनीष-मनीस, आशीष-आसीस।

पाठ-2
पागदभासाए संखा
(प्राकृत भाषा में संख्या)

1.	एक्क, इक्क, एग, एअ	एक	१	26.	छब्बीस	छब्बीस	२६
2.	दो, दुवे, वे	दो	२	27.	सत्तवीस, सत्तावीस	सत्ताईस	२७
3.	ति, तिण्णि	तीन	३	28.	अट्ठावीस	अट्ठाईस	२८
4.	चउ, चउरो	चार	४	29.	एगूणतीस	उनतीस	२९
5.	पंच	पाँच	५	30.	तीस	तीस	३०
6.	छट्ठ	छह	६	31.	एक्कतीस	इकत्तीस	३१
7.	सत्त	सात	७	32.	बत्तीस	बत्तीस	३२
8.	अट्ठ	आठ	८	33.	तेत्तीस	तैंतीस	३३
9.	णव	नौ	९	34.	चउतीस	चौंतीस	३४
10.	दह, दस	दस	१०	35.	पणतीस	पैंतीस	३५
11.	एक्कारह, एगारस	ग्यारह	११	36.	छत्तीस	छत्तीस	३६
12.	बारह, बारस	बारह	१२	37.	सत्ततीस	सैंतीस	३७
13.	तेरह, तेरस	तेरह	१३	38.	अट्ठतीस	अड़तीस	३८
14.	चउद्दह, चउद्दस, चोद्दस	चौदह	१४	39.	एगूणचत्तालीस	उनतालीस	३९
15.	पण्णरह, पण्णरस	पन्द्रह	१५	40.	चत्तालीस, चालीस	चालीस	४०
16.	सोलह, सोलस	सोलह	१६	41.	एक्कचत्तालीस	इकतालीस	४१
17.	सत्तरह, सत्तरस	सत्तरह	१७	42.	बायालीस	बयालीस	४२
18.	अट्ठारह, अट्ठारस,	अठारह	१८	43.	तेआलीस	तैंतालीस	४३
19.	एगूणवीस, अउणवीस,	उन्नीस	१९	44.	चउआलीस	चौंवालीस	४४
20.	वीस	बीस	२०	45.	पणयालीस	पैंतालीस	४५
21.	एगवीस	इक्कीस	२१	46.	छायालीस	छियालीस	४६
22.	बावीस, बाइस	बाइस	२२	47.	सत्तचत्तालीस	सैंतालीस	४७
23.	तेवीस	तेईस	२३	48.	अट्ठचत्तालीस	अड़तालीस	४८
24.	चउवीस	चौबीस	२४	49.	एगूणपण्णास	उनचास	४९
25.	पण्णवीस, पणुवीस	पच्चीस	२५	50.	पण्णास	पचास	५०

51.	एगपण्णास,एगावण्ण	इक्यावन	५१
52.	बावण्ण	बावन	५२
53.	तेवण्ण	तिरेपन	५३
54.	चउवण्ण, चउपण्ण	चौवन	५४
55.	पणपण्ण, पणवण्ण	पचपन	५५
56.	छप्पण्ण	छप्पन	५६
57.	सत्तावण्ण	सत्तावन	५७
58.	अट्ठावण्ण	अट्ठावन	५८
59.	एगूणसट्ठि	उनसठ	५९
60.	सट्ठि	साठ	६०
61.	एगसट्ठि	इकसठ	६१
62.	बासट्ठि	बासठ	६२
63.	तेसट्ठि	तिरेसठ	६३
64.	चउसट्ठि	चौंसठ	६४
65.	पंचसट्ठि , पणसट्ठि	पैंसठ	६५
66.	छसट्ठि	छियासठ	६६
67.	सत्तसट्ठि	सड़सठ	६७
68.	अट्ठसट्ठि	अड़सठ	६८
69.	एगूणसत्तरि	उनहत्तर	६९
70.	सत्तरि	सत्तर	७०
71.	एगसत्तरि	इकहत्तर	७१
72.	बाहत्तरि	बहत्तर	७२
73.	तेहत्तरि	तेहत्तर	७३
74.	चउहत्तरि	चौहत्तर	७४
75.	पंचहत्तरि	पचहत्तर	७५
76.	छहत्तरि	छिहत्तर	७६
77.	सत्तहत्तरि	सतहत्तर	७७
78.	अट्ठहत्तरि	अठहत्तर	७८
79.	एगूणसीइ	उनासी	७९
80.	असीइ	अस्सी	८०
81.	एगासीइ	इक्कासी	८१
82.	बासी	बयासी	८२
83.	तेसीइ	तिरासी	८३
84.	चउरासी	चौरासी	८४
85.	पणसीइ	पचासी	८५
86.	छासीइ	छियासी	८६
87.	सत्तासीइ	सत्तासी	८७
88.	अट्ठासीइ, अट्ठासी	अठासी	८८
89.	एगूणणउइ	नवासी	८९
90.	णवइ	नब्बे	९०
91.	एक्काणवइ	इक्यानवे	९१
92.	बाणुवइ	बानवे	९२
93.	तेणवइ	तिरानवे	९३
94.	चउणवइ	चौरानवे	९४
95.	पंचणवइ	पंचानवे	९५
96.	छण्णवइ	छियानवे	९६
97.	सत्ताणवइ	सत्तानवे	९७
98.	अट्ठाणवइ	अट्ठानवे	९८
99.	णवणवइ	निन्यानवे	९९
100.	सय	सौ	१००
200.	दुसय	दो सौ	२००
300.	तिसय, तिण्ण सय	तीन सौ	३००
400.	चत्तारि सय	चार सौ	४००
500.	पणसय, पञ्चसय	पाँच सौ	५००
1000.	सहस्स	हजार	१०००
100000.	लक्ख	लाख	१०००००
10000000.	कोड़ि	करोड़	१००००००००

पाठ-3

गोम्मटेस - थुदि

विसट्ट-कंदोट्ट-दलाणुयारं, सुलोयणं चंद-समाण-तुण्डं।
घोणाजियं चम्पय-पुप्फसोहं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥1॥

अन्वयार्थः

सुलोयणं	–	जिनके उत्तम नेत्र
विसट्ट-कंदोट्ट	–	नीलकमल छोड़ने वाले अर्थात् उससे भी सुंदर हैं
दलाणुयारं	–	दल के अनुशरण को
चंद समाणतुण्डं	–	चन्द्रमा के समान सौम्य तथा मुख
घोणा	–	नासिका
चम्पय पुप्फसोहं	–	चम्पक पुष्प की शोभा को
जियं	–	जीतती है
तं	–	उन
गोम्मटेसं	–	गोम्मट स्वामी को
णिच्चं	–	नित्य
पणमामि	–	प्रणाम करता हूँ

पद्यानुवादः

नीलकमल के दल-सम जिनके, युगल सुलोचन विकसित हैं।
शशि-सम मनहर सुखकर जिनका, मुख-मण्डल मृदु प्रमुदित है॥
चम्पक की छवि शोभा जिनकी, नम्र नासिका ने जीती।
गोम्मटेश जिन-पाद-पद्म की, पराग नित मम मति पीती॥1॥

भावार्थ-

जिनके सुन्दर नेत्र मृणाल सहित नीलकमल की पाँखुरी का अनुसरण करते हैं, जिनका मुख चन्द्र-मण्डल के समान सुशोभित है और जिनकी नासिका चम्पक पुष्प की शोभा को पराजित करती है, ऐसे उन गोम्मटेश-बाहुबली को मैं नित्य प्रणाम करता हूँ।

अच्छाय-सच्छं जलकंत गंडं, आबाहु दोलंत सुकण्ण पासं।
गइंद-सुण्डुज्जल-बाहुदण्डं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।2।।

अन्वयार्थः

जलकंत गण्डं	–	जल के समान स्वच्छ कपोल
आबाहु दोलंत	–	
सुकण्ण पासं	–	स्कन्धों तक दोलायित हैं कर्णपाश
गइंद – सुण्डुज्जल–		
बाहुदण्डं	–	गजराज की सूण्ड के समान सुन्दर लंबी हैं दोनों भुजाएँ
तं	–	उन
अच्छाय सच्छं	–	आकाश के समान निर्मल
गोम्मटेसं	–	गोम्मट स्वामी को
णिच्चं	–	नित्य
पणमामि	–	प्रणाम करता हूँ।

पद्यानुवादः

गोल-गोल दो कपोल जिन के उज्ज्वल सलिल सम छवि धारे,
ऐरावत-गज की सूण्डा सम बाहुदण्ड उज्ज्वल-प्यारे।
कन्धों पर आ, कर्ण-पाश वे नर्तन करते नन्दन है,
निरालम्ब वे नभ-सम शुचि मम, गोमटेश को वन्दन है।।2।।

भावार्थ-

जिनकी देह आकाश की भाँति निर्मल है, जिनके कपोल जल के समान स्वच्छ हैं, जिनके कर्ण पल्लव स्कन्धों तक दोलायित हैं, जिनकी दोनों भुजाएँ गजराज की सूण्ड के समान सुन्दर लगती हैं, ऐसे उन गोम्मटेश-बाहुबली को मैं नित्य प्रणाम करता हूँ।

सुकण्ठ-सोहा जियदिव्व संखं, हिमलायुद्दाम विसाल कंधं।
सुपेक्ख णिज्जायल सुठ्ठुमज्झं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।3।।

अन्वयार्थः

सुकण्ठ –सोहा जिय–		अद्वितीय कंठ की शोभा से जीत लिया है
दिव्वसंखं	–	अनुपम शंख की शोभा को
हिमालयुद्दाम	–	हिमालय की भाँति उन्नत और
विसाल कंधं	–	उदार जिनका वक्षस्थल है

सुपेक्खणिज्जायल-		
सुट्ठुमज्झं	-	सम्यक् अवलोकनीय है और अचल है सुन्दर मध्यभाग/कटि प्रदेश
तं	-	उन
गोम्मटेसं	-	गोम्मट स्वामी को
णिच्चं	-	नित्य
पणमामि	-	प्रणाम करता हूँ।

पद्यानुवादः

दर्शनीय तव मध्य भाग है गिरि-सम निश्चल अचल रहा,
दिव्य शंख भी आप कण्ठ से हार गया वह विफल रहा।
उन्नत विस्तृत हिमगिरि-सम है, स्कन्ध आपका विलस रहा,
गोमटेश प्रभु तभी सदा मम तुम पद में मन निवस रहा॥3॥

भावार्थः

अपने विलक्षण कण्ठ की शोभाश्री से जिन्होंने दिव्य शंख की शोभा-सुषमा को जीत लिया है, जिनका वक्षस्थल हिमालय की भाँति उन्नत और उदार है, जिनका कटिप्रदेश सुदृढ़ और प्रेक्षणीय है, ऐसे उन गोम्मटेश-बाहुबली को मैं नित्य प्रणाम करता हूँ।

विंज्झायलग्गे पविभासमाणं, सिहामणि सव्व-सुचेदियाणं।
तिलोय-संतोसय-पुण्णचंदं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥4॥

अन्वयार्थः

विंज्झायलग्गे	-	विन्ध्यगिरि के अग्रभाग में
पविभासमाणं	-	जो प्रकाशमान हो रहे हैं
सव्व सुचेदियाणं	-	सभी सुन्दर चैत्यों के
सिहामणि	-	शिखामणि तथा
तिलोय-संतोसय-		
पुण्णचंद	-	तीन लोक के जीवों को आनन्द देने में पूर्ण चन्द्रमा हैं
तं	-	उन
गोम्मटेसं	-	गोम्मट स्वामी को
णिच्चं	-	नित्य
पणमामि	-	प्रणाम करता हूँ।

पद्यानुवादः

विंध्याचल पर चढ़ कर खरतर तप में तत्पर हो बसते,
सकल विश्व के मुमुक्षु जन के, शिखामणी तुम हो लसते।
त्रिभुवन के सब भव्य कुमुद ये खिलते तुम पूरण शशि हो,
गोमटेश तुम नमन तुम्हें हो सदा चाह बस मन वशि हो।।4।।

भावार्थः

विन्ध्यगिरि के अग्रभाग में जो अनुपम कान्ति से दमक रहे हैं, विंध्याचल के पर्वत में जो तपस्यालीन हैं और सब भव्य जनों के लिए जो वैराग्यरूपी प्रासाद के शिखर की शिखामणि हैं, तथा तीन लोक के जीवों को आनन्द प्रदान करने में जो पूर्ण चन्द्रमा के समान हैं, ऐसे उन गोम्मटेश–बाहुबली को मैं नित्य प्रणाम करता हूँ।

लयासमक्कंत - महासरीरं, भव्वावलीलद्ध - सुकप्परुक्खं।
देविंदविंदच्चिय - पायपोम्मं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।5।।

अन्वयार्थः

लयासमक्कंत–महासरीरं	–	लताओं से आक्रान्त विशाल शरीर है
भव्वावलीलद्ध–सुकप्प रुक्खं	–	भव्य समूह के लिए प्राप्त कल्पवृक्ष तथा
देविंदविंदच्चिय–पायपोम्मं	–	देवेन्द्रों के द्वारा अर्चित जिनके चरण कमल हैं
तं	–	उन
गोम्मटेसं	–	गोम्मट स्वामी को
णिच्चं	–	नित्य
पणमामि	–	प्रणाम करता हूँ

पद्यानुवादः

मृदुतम बेल लताएँ लिपटी पग से उर तक तुम तन में,
कल्पवृक्ष हो अनल्प फल दो भवि-जन को तुम त्रिभुवन में।
तुम पद-पंकज में अलि बन सुर-पति गण करता गुन-गुन है,
गोमटेश प्रभु के प्रति प्रतिपल वन्दन अर्पित तन-मन है।।5।।

भावार्थः

जिस कामदेव के सुविशाल शरीर पर चरण से भुजाओं तक माधवी लताएँ लिपटी हुई हैं, भव्यों के लिए जो कल्पवृक्ष जैसे फल प्रदाता हैं और देवेन्द्र–समूह जिनके चरण कमलों की अर्चना–पूजन करते हैं, ऐसे उन गोम्मटेश–बाहुबली मैं नित्य प्रणाम करता हूँ।

दियंबरो जो ण च भीइजुत्तो, ण चांबरे सत्तमणो विसुद्धो।
सम्पादिजंतुप्फुसदो ण कंपो, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं॥6॥

अन्वयार्थः

जो दियबंरो	–	जो दिगम्बर हैं
च	–	और
भीइजुत्तो	–	भययुक्त
ण	–	नहीं हैं अर्थात् निर्भय हैं
ण अंबरे	–	न वस्त्रादि में
सत्तमणो	–	आसक्त मन वाले हैं
विसुद्धो	–	विशुद्ध हैं
सम्पादि जंतुप्फुसदो	–	सर्पादि जंतुओं में स्पर्श होने पर भी
ण कंपो	–	कम्पायमान नहीं हैं
तं	–	उन
गोम्मटेसं	–	गोम्मट स्वामी को
णिच्चं	–	नित्य
पणमामि	–	प्रणाम करता हूँ

पद्यानुवादः

अम्बर तज अम्बर-तल थित हो दिग अम्बर नहिं भीत रहे,
अंबर आदि विषयन से अति विरत रहे भव भीत रहे।
सर्पादिक से घिरे हुए पर अकम्प निश्चल शैल रहे,
गोमटेश स्वीकार नमन हो धुलता मन का मैल रहे॥6॥

भावार्थः

जो दिगम्बर श्रमण हैं, सप्तभय से विप्रमुक्त हैं, अभीत हैं, वस्त्रवल्कलादि पर आसक्त मन वाले नहीं हैं और विषधर-नागराजादि जन्तुओं से दुरावृत होने पर भी जो अकम्प-अविचल हैं; ऐसे उन गोम्मटेश – बाहुबली को मैं नित्य प्रणाम करता हूँ।

आसां ण जो पेक्खदि सच्छदिट्ठि, सोक्खे ण वंछा हयदोसमूलं।
विरायभावं भरहे विसल्लं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।7।।

अन्वयार्थः

जो	–	जो
सच्छदिट्ठि	–	स्वस्थ (सम) दृष्टि होने से
आसां	–	आसा (तृष्णा) को
ण पेक्खदि	–	पुष्ट नहीं करते
हयदोसमूलं	–	दोषों का मूल (मोह) नाश करने से
सोक्खे	–	जिनकी सुख में
ण वंछा	–	वाच्छा नहीं
विरायभावं	–	विरागभाव होने से
भरहे	–	भरत में
विसल्लं	–	निशल्य हैं
तं	–	उन
गोम्मटेसं	–	गोम्मट स्वामी को
णिच्चं	–	नित्य
पणमामि	–	प्रणाम करता हूँ

पद्यानुवादः

आशा तुम को छू नहिं सकती समदर्शन के शासक हो,
जग के विषयन में वांछा नहिं दोष मूल के नाशक हो।
भरत-भ्रात में शल्य नहीं अब विगत-राग हो रोष जला,
गोमटेश तुम में मम इस विध सतत राग हो होत चला।।7।।

भावार्थः

जो स्वस्थ (सम) दृष्टि होने से आसा (तृष्णा) को पुष्ट नहीं करते, स्वदोषों के समूल विनष्ट होने से जिन्हें सांसारिक सुखों की वांछा नहीं रही और अग्रज भरत के प्रति जो संज्वलन मान था, वह अब वैराग्य में परिणत हो गया है; ऐसे निःकांक्षित गोम्मटेश-बाहुबली को मैं नित्य प्रणाम करता हूँ।

उपाहिमुत्तं धण-धाम-वज्जियं, सुसम्मजुत्तं मय-मोहहारयं।
वस्सेय-पज्जंतमुववास-जुत्तं, तं गोम्मटेसं पणमामि णिच्चं।।8।।

अन्वयार्थः

उपाहिमुत्तं	–	जो उपाधि से रहित है
धण-धाम-वज्जियं	–	धन मकानादि से रहित
सुसम्मजुत्तं	–	समता भाव सहित हैं
मय मोह हारयं	–	मद मोह को नष्ट करने वाले हैं
वस्सेयपज्जंतं	–	एक वर्ष पर्यंत
उववास जुत्तं	–	उपवास धारण करने वाले
तं	–	उन
गोम्मटेसं	–	गोम्मट स्वामी को
णिच्चं	–	नित्य
पणमामि	–	प्रणाम करता हूँ।

पद्यानुवादः

काम-धाम से धन-कंचन से सकलसंग से दूर हुए,
शूर हुए मद मोह-मार कर समता से भरपूर हुए।
एक वर्ष तक एक थान थित निराहार उपवास किए,
इसीलिए बस गोमटेश जिन मम मन में अब वास किए।।8।।

भावार्थः

जो समस्त उपाधि, परिग्रह से मुक्त हैं, धन और धाम का जिन्होंने अन्तरंग से ही परित्याग कर दिया है, मद एवं मोह, राग और द्वेष को जिन्होंने तप द्वारा जीत लिया है, जो क्षायिकभाव में स्थित हैं तथा पूरे एक संवत्सर (वर्ष) तक जिन्होंने अखण्ड उपवास व्रत किया है; ऐसे उन गोम्मटेश-बाहुबली को मैं नित्य प्रणाम करता हूँ।

पाठ-4

पागदकहा (प्राकृतकथा)

1 - अइलालसा

एको कागो एगदा पस्सदि जं.-अण्णादिखज्जसामग्गीभरिदं उसहजाणं मग्गस्सुवरि पडिदिणं णिगच्छदि। मग्गो देसे देसे विसमो विसमो होदि तेण बहुगी सामग्गी मग्गे पडदि। अहो एसो मग्गो मज्झं सग्गसमो जादो। मए सह जे अण्णे वि पक्खिणो आजंति तेण ममट्ठं अवसिट्ठ अण्णं पज्जत्तं ण जायदि। अहं ते वज्जामि। जदा अण्णे चडिकादिपक्खिणो आगदा तदा कागो कहेदि-जूयं णिस्संदेहेण अण्णं मग्गम्मि पावेह। एसो मग्गो अम्हाणं भयावहट्ठाणं जेण जाणगमणेण मरणं कदावि होज्ज। जाणवाहगा पक्खिणस्सुवरि गमणे आणंदंति त्ति मए दिट्ठं। आगच्छ! आगच्छ! एत्थ पस्संतु केई मुदा चिट्ठंति, केई पंखरहिदा जादा, केई मरणमुहे पविसंति। एवं दट्ठण पक्खिणो वदंति एत्थ ठाणे अम्हे कदावि ण आगच्छस्सिंति। अम्हाणं रक्खट्ठं संबोधो कदो तेण धेण्णवादपत्तोसि त्ति कहिदूण सव्वे पलाइदा। कागो पइदिणं एगो हि पडिदण्णं खादूण हरिसदि। एगदा सो अइआसत्तो होदूण मग्गे अण्णं खादमाणो चिट्ठदि। जाणवाहगेण कोक्किदं। कागेण ण सुदं। जाणं कागस्सुवरि णिग्गदं। कागो मुदो। जं अण्णेहिं सह घडिदं तं सगेण वि होदि त्ति अइलालसा वज्जेयव्वा। तत्तो पच्छा कागा अण्णं कोक्किदूण भुंजंति त्ति णादव्वं भवदि।

1 - अतिलालसा

एक कौआ एक बार देखता है कि अन्न आदि खाद्य सामग्री से भरी हुई कई बैल गाड़ियाँ रास्ते के ऊपर से प्रतिदिन निकलती हैं। मार्ग स्थान-स्थान पर ऊबड़-खाबड़ है जिससे बहुत सी सामग्री रास्ते पर गिर जाती थी। अहो! यह मार्ग मेरे लिए तो स्वर्ग के समान है। मेरे साथ जो अन्य भी पक्षी आ जाते हैं इसलिए मेरे लिए बचा हुआ अन्न पर्याप्त नहीं होता है। मैं उन्हें रोकता हूँ। जब अन्य चिड़िया आदि पक्षी आए तो कौआ कहता है - तुम लोगों को नि:संदेह अन्य रास्ते को प्राप्त करना चाहिए। यह मार्ग हम लोगों के लिये भय का स्थान है क्योंकि गाड़ी के चलने से मरण कभी भी हो सकता है। मैंने देखा है कि बैलगाड़ी चलाने वाले पक्षियों के ऊपर गाड़ी चलाने में आनंदित होते हैं। आओ! आओ! यहाँ देखो, कितने ही पक्षी यहाँ पर मरे हुए पड़े हैं, कितने ही पक्षी पंख रहित हो गए हैं, कितने ही पक्षी मरने वाले हैं। इस प्रकार देखकर पक्षी कहते हैं, इस स्थान पर हम लोग कभी भी नहीं आएंगे। हम लोगों की रक्षा के लिए आपने संबोधन किया इसके लिए आप धन्यवाद के पात्र हैं, इस प्रकार कहकर सभी पलायन कर गए। कौआ प्रतिदिन अकेला ही गिरे हुए अन्न को खाकर हर्षित होने लगा। एक बार वह आसक्त होकर रास्ते पर अन्न खाने में लगा था। बैलगाड़ी चलाने वाले ने आवाज लगाई। कौए ने नहीं सुना। गाड़ी कौए के ऊपर से निकल गई। कौआ मर गया। जो दूसरों के साथ घटित होता है वह अपने साथ भी होता है। इस प्रकार अतिलालसा छोड़ देनी चाहिए। उसके बाद कौए अन्य कौओं को बुलाकर खाने लगे, यह जानने योग्य है।

2 - मुत्तिमग्गो

एगो भीलो पक्खिणे गिण्हिदूण विक्कीणदि। एगदा तेण अरण्णे विसिट्ठो कीरो दिट्ठो। तं पाऊण सो रायाए संकासं गदो। तत्य सो कहेदि– राय! एसो कीरो जादंवदोत्थि। कदिवयमासेसु मणुस्सस्स सरिसो होदूण भणिस्सदि परोप्पंर वयणालावं वि कादुं समत्थो होहिदि। णिवेण सो उचिदमुल्लेण संगहीदो। कालं वोल्लिय सो तहा जादो।

एगदा णयरे को वि महप्पा आगदो। राया वि तस्स दंसणट्ठं गमिउं उज्जदो। एवं णादूण कीरो कहेदि– राय! तत्थ गंतूण एगा पुच्छा अवस्सं कादव्वा जं–किं मुत्तीए मग्गो? राया महप्पणो उवदेसं सुणिदूण एयंते महप्पं समीवं गदो। पुच्छा कदा तेण। महप्पेण तस्स वत्ता सुदा। पच्छा सो महप्पा पुढवीए सवासणेण अंगोवंगं अकंपिऊण णिच्छलो जादो। राया सगपासादे समागदो। कीरस्स कण्णे सव्वं जहा घडिदं तहा वुत्तं तव्विसए णिवेण। अवरदिवसे कीरो पंजरे हि सवासणेण णिच्छलो होदूण सयिदो। बहुकालपज्जंतं तस्स अकंपियवत्थयं पेक्खिऊण राया चिंतेदि–इमो आउअक्खएण मदो। तदो पंजरस्स बाहिरे कादूण दूरं णिक्खित्तो। तदा सो कीरो गगणे उड्डिऊण मुत्तो जादो। राया तं दिट्ठूण चिंतदि – सच्चं एसो खलु मुत्तिमग्गो जं–संसार–पिंजरे वि तहा वसिदव्वं जहा अहं णत्थि त्ति सिक्खा।

2 - मुक्ति का मार्ग

एक भील पक्षियों को पकड़कर बेचता है। एक बार उसने जंगल में विशिष्ट तोता देखा। उसको लेकर वह राजा के पास गया। वहाँ पहुँचकर वह कहता है कि यह तोता बचपन से बोलने वाला है। कुछ ही महीनों में यह मनुष्य के समान होकर बोलेगा और आपस में वार्तालाप भी करने में समर्थ होगा। राजा ने उस तोते को उचित मूल्य पर खरीद लिया। समय बीतने पर वह तोता उसी प्रकार का हो गया।

एक बार नगर में कोई महात्मा आए। राजा भी उनके दर्शन के लिए जाने को तैयार हुआ। तोता यह बात जानकर कहता है – 'राजन्! वहाँ जाकर एक प्रश्न अवश्य करना कि 'मुक्ति का मार्ग क्या है?' राजा महात्मा के उपदेश को सुनकर एकान्त में महात्मा के समीप गया। राजा ने पूछा। महात्मा ने उसकी वार्ता सुनी। बाद में वह महात्मा पृथ्वी पर शवासन से अपने अंग–उपांगों को हिलाए बिना निश्चल हो गया। राजा अपने महल में आ गया। तोते के कान में सब कुछ जैसा घटित हुआ उसी प्रकार राजा ने उस प्रश्न के विषय में कह दिया। दूसरे दिन तोता पिंजड़े में शवासन से निश्चल होकर सोया रहा। बहुत समय तक उसकी अकंपित अवस्था देखकर राजा विचार करता है कि – यह आयु के क्षय से मर गया है। फिर उसने पिंजड़े से बाहर निकाल कर दूर फेंक दिया। तभी वह तोता आकाश में उड़कर मुक्त हो गया। राजा उसे देखकर सोचता है – सत्य है, यह ही मुक्ति का मार्ग है कि – संसार रूपी पिंजड़े में उसी प्रकार रहना चाहिए जैसे कि मैं नहीं हूँ, यह शिक्षा मुझे मिली है।

पाठ-5

सुभासिदवयणं

(सुभाषित वचन)

❖ **धम्मो दयाविसुद्धो।**

धर्म दया से विशुद्ध है।

❖ **विणओ मोक्खद्दारं।**

विनय मोक्ष का द्वार है।

❖ **जिणवयणं कलुसहरं अहो य रत्ती य पढिदव्वं।**

जिन भगवान् के वचन कलुषता को हरने वाले हैं, इसलिए जिनवचन रात-दिन पढ़ना चाहिए।

❖ **अज्झप्प कज्जं चिरमोहहाणी।**

अध्यात्म का कार्य चिरकालीन मोह का नाश करना है।

❖ **वीलणमच्छोव्व मणो**

मन अति चिकने मच्छ की तरह है।

❖ **अप्पपसंसं परिहरह।**

आत्म प्रशंसा करना छोड़ दो।

❖ **गुरुवयणं भमहरणं।**

गुरुवचन भ्रम को दूर करते हैं।

❖ **जिणवयण-मोसहमिणं।**

यह जिनवचन औषध हैं।

❖ **पुरिसत्थो दुल्लहो लोए।**

पुरुषार्थ करना लोक में दुर्लभ है।

❖ **जत्थ रुई तत्थ मग्गो वि।**

जहाँ रुचि है वहाँ रास्ता भी है।

प्राकृत व्याकरण

नियमावली

नियम 1 – कर्त्ता के अनुसार क्रिया का वचन और पुरुष होता है। जैसे 'सो पढदि' यहाँ कर्त्ता (सो) प्रथम पुरुष एकवचन में है तो क्रिया (पढदि) भी प्रथम पुरुष एकवचन में होगी।

नियम 2 – पुंलिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग, इन तीनों लिगों के संज्ञा और सर्वनाम शब्दों के साथ क्रियापद का रूप वही रहता है। जैसे –सा पढदि। तं पढदि।

नियम 3 – कर्ता में प्रथमा विभक्ति और कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है।

नियम 4 – प्राकृत में मात्र दो ही वचन होते हें – एकवचन और बहुवचन।

नियम 5 – वर्तमानकाल की क्रिया में 'है' या 'रहा है' दोनों प्रयोग होते हैं। जैसे–वह जाता है या जा रहा है। दोनों अर्थ में 'गच्छइ' होगा।

विशेष:– शौरेसेनी प्राकृत में अंत 'त' का 'द' हो जाता है तथा महाराष्ट्र प्राकृत में 'इ' हो जाता है।

नियम 6 – तीन पुरुष होते हैं। **(क)** प्रथम (या अन्य) पुरुष अर्थात् वह, वे दोनों, वे सब, किसी व्यक्ति या वस्तु का नाम भी अन्य पुरुष कहा है। **(ख)** – मध्यम पुरुष अर्थात् तू, तुम, तुम दोनों, तुम सब **(ग)** – उत्तम पुरुष अर्थात् मैं, हम दोनों, हम सब। ये नाम स्मरण कर लें।

नियम 7 – कर्ता जिस पुरुष और जिस वचन का होगा, उसी के अनुसार क्रिया और वचन होगा। जैसे तुमं पढसि, यहाँ कर्ता मध्यम पुरुष का एकवचन है तो क्रिया भी उसी अनुसार हुई। तुम्हे पढह इत्यादि।

नियम 8 – प्राकृत में कुल 10 स्वर होते हैं। जिनमें पाँच ह्रस्व स्वर होते हैं और पाँच दीर्घ स्वर होते हैं।

1. ह्रस्व स्वर – अ इ उ ए ओ
2. दीर्घ स्वर – आ ई ऊ ए ओ

इस प्रकार आपने देखा कि ऐ और और स्वर भी ए और ओ के रूप में ही अभिव्यक्त होते हैं।

प्रयोग – बच्चो! देखो बोली भाषा में भी हम लोग सामान्यत: इन स्वरों का प्रयोग नहीं करते हैं। इसलिए प्राकृत पहले बोली भाषा के रूप में प्रचलित थी और यह जन सामान्य की भाषा थी। जैसे– कैलास, ऐरावनत, ऐनक, शैल। सामान्य रूप से हम बोलते हैं– केलास या कइलास बस यही प्राकृत भाषा है। इसी तरह एरावत या अइरावत, एनक या अइनक, सेल या सइल। बोलो – यौवन, बोलने में आएगा – योवन, यही प्राकृत है।

नियम–9– प्राकृत में अ: विसर्ग का लोप होकर उसके स्थान पर ओ या ए हो जाता है। जैसे– देव: – देवो, जिण:–जिणो, बाला:–बालाए, माला:–मालाए।

नियम 10 –संज्ञा शब्दों में जो शब्द ओकारान्त लिखे जाते हैं वे सभी पुं. लिंग के जानना और जिन शब्दों में अनुस्वार रहता है जैसे जोव्वणं उन्हें नपुंसक लिंग के जानना।

प्राकृत में व्यंजनों की संख्या 29 है–

क वर्ग –क, ख, ग, घ
च वर्ग – च, छ, ज, झ
ट वर्ग– ट, ठ, ड, ढ, ण
त वर्ग – त, थ, द, ध, न
प वर्ग – प, फ, ब, भ, म
अन्तस्थ –य, र, ल, व
ऊष्माक्षर – स, ह

तीनों पुरुषों के रूप एक साथ देखें-

	एकवचन	**बहुवचन**
अन्य पुरुष	सो (पुं.) सा (स्त्री.) तं (नपुं.)	ते (पुं.), ताओ (स्त्री.), ताणि (नपुं.)
मध्यम पुरुष	तुमं	तुम्हे
उत्तम पुरुष	अहं	अम्हे

नियम 11 –'अस' क्रियापद से एकवचन में 'अत्थि' और बहुवचन में 'संति' रूप होता है, यह स्मरण में रखें।

नियम 12 – अव्ययों के रूप नहीं चलते हैं।

नियम 13 –कहीं संज्ञा का विशेषण सर्वनाम शब्द बनते हैं। जैसे– ये बालक, वे फल आदि। इसमें संज्ञा शब्द बालक, फल हैं। सर्वनाम ये, वे हैं। इन सर्वनामों की विभक्ति, लिंग, वचन संज्ञा के अनुसार चलते हैं।

नियम 14–कहीं संज्ञा के बिना सर्वनाम शब्द ही कर्ता में प्रयुक्त होते हैं।

नियम 15– जो वस्तु या व्यक्ति के संबंध में कुछ बतलाए वह क्रिया कहलाती है। क्रियाएँ दो प्रकार की होती हैं–1. **सकर्मक क्रिया**–जिसमें क्रिया का प्रभाव कर्म पर पड़े या जिसमें किसका, किसकी, किस ओर लगाने पर कर्म का ज्ञान या अपेक्षा होवे वह सकर्मक क्रिया है। जैसे– वह पूजा करता है, इस वाक्य में पूजा करना, इस क्रिया में किसका, किसकी शब्द लगाकर पूछने पर कर्म की अपेक्षा ज्ञात होती है इसलिए यह सकर्मक क्रिया है। **2. अकर्मक क्रिया**– जिसमें क्रिया का प्रभाव कर्ता पर पड़े या किसकी, किसका इन प्रश्नों की अपेक्षा न रहे वह अकर्मक क्रिया है। जैसे वह प्रसन्न होता है। यहाँ प्रसन्न होने का प्रभाव 'वह' कर्ता पर है, किसका, किसकी अपेक्षा नहीं है इसलिए अकर्मक क्रिया है। सकर्मक क्रिया के साथ कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है।

नियम 16 – इस अभ्यास में दिए गए स्त्रीलिंग के सर्वनाम शब्दों के साथ स्त्रीलिंग के ही संज्ञा शब्द प्रयुक्त होंगे।

नियम 17 – प्राकृत वर्णमाला में ङ एवं ञ् का स्वतन्त्र प्रयोग नहीं होता है। ये व्यंजन अपने वर्ग के व्यंजनों के साथ अनुस्वार (ं) के रूप में प्रयुक्त होते हैं। जैसे– जङ्घा का प्राकृत में जंघा, वाञ्छा-वंछा, पङ्क-पंक, मञ्च-मंच, शङ्का-संका।

प्राकृत में 'श' एवं 'ष' के स्थान पर 'स' का ही प्रयोग होता है। जैसे-सुरेश-सुरेस, मनीष-मनीस, आशीष-आसीस।

नियम 18 –इस अभ्यास में दिए गए नपुं. के सर्वनाम के साथ नपुं. के ही संज्ञा शब्द प्रयुक्त होंगे।

नियम 19 – जो कर्ता को अभीष्ट हो और क्रिया जिसे चाहे वह शब्द कर्म होता है। कर्म की पहचान के लिए देखें नियम 15. द्वितीया विभक्ति 'को' से पहचानी जाती है।

नियम 20 –'विणा' के साथ द्वितीया विभक्ति लगती है।

नियम 21– ण + अत्थि – णत्थि (नहीं है)

नियम 22 –द्वितीया विभक्ति के बहुवचन में पुंलिंग शब्दों के अन्त में 'ए' प्रत्यय लगाकर भी रूप बनता है। शास्त्रों में यही प्रयोग बहुतकर मिलता है। अभ्यास 1 में दोनों रूप दिखाए हैं–जिणा या जिणे।

अभ्यास 1

(क) सर्वनाम शब्द - तृतीया विभक्ति- मए (मेरे द्वारा), तुमए (तेरे द्वारा), तेण (उसके द्वारा), इमेण (इसके द्वारा)

सूचना- ये सभी तृतीया विभक्ति के एकवचन के रूप हैं। पूरे रूप नीचे देखें।

(ख) संज्ञा शब्द- (इ, उकारान्त स्त्री.)-जुवइ (युवती), धेणु (गाय, धेनु), मणि (रत्न), तणु (शरीर), भत्ति (भक्ति)

(ग) क्रिया पद- बोल्ल (बोलना), कोक्क (बुलाना, आवाज लगाना), पाव (प्राप्त करना) हव (होना), हो (होना)

(घ) अव्यय पद -कदा (कब), जहा (जैसे), तहा (तैसे), तदा (तब), जदा (जब)

व्याकरण

सर्वनाम शब्दों के तृतीया विभक्ति में रूप इस प्रकार होंगे-

लिंग	**एकवचन**	**अर्थ**	**बहुवचन**	**अर्थ**
	मए	मेरे द्वारा	अम्हेहि	हमारे द्वारा, हम दोनों के द्वारा
	तुमए	तेरे द्वारा	तुम्हेहि	तुम्हारे द्वारा, तुम दोनों के द्वारा
(पुं.नपुं.)	तेण	उसके द्वारा	तेहि	उनके द्वारा, उन दोनों के द्वारा
(स्त्री.)	ताए	उसके द्वारा	ताहि	उनके द्वारा, उन दोनों के द्वारा
(पुं.नपुं.)	इमेण	इसके द्वारा	इमेहि	इनके द्वारा, इन दोनों के द्वारा
(स्त्री.)	इमाए	इसके द्वारा	इमाहि	इनके द्वारा, इन दोनों के द्वारा

उपर्युक्त संज्ञा शब्द के प्रथमा, द्वितीया वि. में रूप देखें-

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा वि.	जुवई, धेणू	जुवईओ, धेणूओ
द्वितीया वि.	जुवइं, धेणुं	जुवईओ, धेणूओ

सूचना-इसी तरह सभी शब्दों के रूप बनेंगे।

नियम 23 - वर्णमाला से। **नियम 23** - क्ष, त्र, ज्ञ इन संयुक्त व्यंजनों का प्राकृत में स्वतन्त्र प्रयोग नहीं होता है। इनके स्थान पर अन्य वर्ण आ जाते हैं। जैसे-

क्षत्री - खत्ती (क्ष को ख और त्र का त्त), पुत्र-पुत्त, मित्र-मित्त, ज्ञानी-णाणी (ज्ञ का ण) ज्ञेय-णेय

नियम 24-तृतीया विभक्ति- 'के द्वारा, से' अर्थ में लगती है। यह करण कारक है। सहायक कारण को करण कहते हैं। जैसे- वह कलम से लिखता है, यहाँ 'कलम' सहायक कारण है। यही करण है। इसमें तृ.वि. का प्रयोग होगा। इसी तरह-वह किससे पढ़ता है, वह गुरु से सीखता है इत्यादि।

नियम 25 - सह (साथ) के अर्थ में भी तृ.वि. का प्रयोग होता है।

नियम 26-मेरे द्वारा, तेरे द्वारा यह रूप तृ.वि. के जानना। इसी तृतीया विभक्ति के अनुसार क्रिया प्रयुक्त नहीं होगी। जैसे-मए, होइ, अम्हेहि, होइ।

अभ्यास 1

1. प्रयोग देखें-

यह कार्य मेरे द्वारा होता है– इमं कज्जं मए होइ। यह कार्य हम सब के द्वारा होता है– इमं कज्जं अम्हेहि होइ। ये कार्य हम सब के द्वारा होते हैं-इमाणि कज्जाणि अम्हेहि होंति। यह युवती मेरे साथ पढ़ती है-इमा जुवई मए सह पढइ। यह सुख इससे है–इमं सुहं इमेण हवइ।

2 अभ्यास करें-

(क) यह कार्य उसके द्वारा होता है। वह कार्य हम सबके द्वारा होता है। यह कार्य इस (स्त्री.) के द्वारा होता है। यह सुख उस (स्त्री.) के द्वारा होता है।

(ख) यह सुख उन (पुं.) के द्वारा होता है। वे कार्य तुम्हारे द्वारा होते हैं। ये कार्य हमारे द्वारा होते हैं। वे दोनों उसके साथ जाते हैं।

3.

अशुद्ध वाक्य	**शुद्ध वाक्य**	**नियम**
इमं कज्जं मए होंति	इमं कज्जं मए होइ	26
इमाणि कज्जं मए होइ	इमं कज्जं मए होइ	13
ते सुहाणि तुमए होइ	ताणि सुहाणि तुमए होंति	13
तं सुहं अम्हेहि होंति	तं सुहं अम्हेहि होइ	26
सो जुवइ पढइ	सा जुवई पढइ	13

4 शुद्ध करो तथा नियम बताओ-

इमेण इमं ण होंति। इमं सह सा गच्छइ। इमो धेणू गच्छइ। इमाए धेणुओ गच्छंति। जुवइ पासई।

5. गृह कार्य-

❖ अभ्यास 2 (क) के वाक्यों को बहुवचन में बनाएँ।

❖ अभ्यास 2 (ख) के वाक्यों को एकवचन में बनाएँ।

❖ सभी संज्ञा शब्दों (इस अभ्यास) के रूप दोनों विभक्तियों में लिखें।

❖ सर्वनामों के तृ.वि.में रूप याद करें।

अभ्यास 2

(क) सर्वनाम शब्द – तृतीया विभक्ति – सव्व (सर्व), क (कौन), ज (जो)।

(ख) संज्ञा शब्द– (ई, ऊकारान्त स्त्री.)–णई (नदी), साडी (साड़ी), बहू (बहू), सासू (सास)

(ग) क्रिया पद– जीव (जीना), उच्छल (उछलना), वंद (वन्दना करना, प्रणाम करना), गा (गाना), कलह (कलह करना, झगड़ना)

व्याकरण

1. 'सव्व' और 'क' सर्वनाम शब्दों के तीन लिंगों में रूप देखें–

विभक्ति	**एकवचन**	**लिंग**	**बहुवचन**
प्र.वि.	सव्वो, को	पुं.	सव्वे, के
द्वि.वि.	सव्वं, कं	पुं.	सव्वे, के
तृ.वि.	सव्वेण, केण	पुं.	सव्वेहि, केहि
प्र.वि.	सव्वं, कं	नपुं.	सव्वाणि, काणि
द्वि.वि.	सव्वं, कं	नपुं.	सव्वाणि, काणि
तृ.वि.	सव्वेण, केण	नपुं.	सव्वेहि, केहि
प्र.वि.	सव्वा, का	स्त्री.	सव्वाओ, काओ
द्वि.वि.	सव्वं, कं	स्त्री.	सव्वाओ, काओ
तृ.वि.	सव्वाए, काए	स्त्री.	सव्वाहि, काहि

2. संज्ञा शब्दों में तृतीया विभक्ति में तीनों लिंगों के शब्दों में स्मरण रखें–

पुं.	जिणेण	जिणेहि
स्त्री.	बालाए	बालाहि
नपुं.	पोत्थएण	पोत्थएहि

सूचना– स्त्री. के ईकारान्त, ऊकारान्त शब्दों के लिए रूप संख्या आगे शब्द रूपों में देखें।

नियम 27–'विणा' के अर्थ में तृतीया विभक्ति भी होती है।

नियम 28 – सव्व, क आदि सर्वनाम के साथ क्रिया अन्य पुरुष की ही होती है।

नियम 29 – स्त्रीलिंग के इ एवं उकारान्त शब्दों में तृ.वि. में दीर्घ होकर एकवचन में ए और बहुवचन में हि या हिं लगता है। जैसे–जुवईए, जुवईहि, धेणूए, धेणूहि, धेणूहिं।

बहुवचन में हि या हिं का प्रयोग पुं., नपुं. के शब्द में भी होता है।

अभ्यास 2

1. प्रयोग देखें–

सभी सुख से जीते हैं–सव्वे सुहेण जीवंति। मित्र कौन है–मित्तं कं अत्थि। वहाँ कौन सी वस्तुएँ हैं–तत्थ काणि वत्थूणि संति। कौन वन्दना करता है–को वंदइ। बालिकाओं के साथ कौन गाता है–बालाहि सह को गाइ।

2 अभ्यास करें–

(क) फल से क्या है। कौन बुलाता है। नदी उछलती है। पुस्तक के बिना कौन पढता है। सभी बालाएँ नाचती हैं। बहू सास के साथ झगड़ती है। मैं सब को जानता हूँ। वह बालक के साथ गाता है। वह किस पुस्तक से पढ़ता है।

(ख) बालिकाएँ बहू के साथ जाती हैं। सभी बहुएँ सासू को प्रणाम करती हैं। सभी पुस्तकें ले जा रहे हैं। बहुएँ किस साड़ी को देखती हैं। कौन (स्त्री.) तुम सबको जानती है। बच्चे भक्ति से वन्दना करते हैं।

3.

अशुद्ध वाक्य	**शुद्ध वाक्य**	**नियम**
के ममं जाणइ	के ममं जाणंति	14,28,1
सव्वे पढामो	सव्वे पढंति	28
को पोत्थओ उच्छलंति	को पोत्थअं उच्छलइ	3,1
ते कं पोत्थएण पढंति	ते केण पोत्थएण पढंति	13,24
सो के सह खाइ	सो केण सह खाइ	25
सो जुवइए सह आगच्छइ	सो जुवईए सह आगच्छइ	29

4 शुद्ध करो तथा नियम बताओ–

सव्वो जाणंति। को का जाणइ। सो सव्वा सत्थाणि पढइ। जुवइओ वारिं ण्हाइ। सिसूणो फलं दाइ। गुरु किं दासि। सा भोजणो विणा जीवंति।

5. गृह कार्य–

- ❖ अभ्यास 2 (क) के वाक्यों को बहुवचन में बनाएँ।
- ❖ अभ्यास 2 (ख) के वाक्यों को एकवचन में बनाएँ।
- ❖ जीव आदि क्रियाओं के तीनों पुरुषों में रूप लिखो।

अभ्यास 3

(क) सर्वनाम शब्द - चतुर्थी विभक्ति-मज्झ (मेरे लिए), तुज्झ (तेरे लिए), तस्स (उसके लिए), इमस्स (इसके लिए)

सूचना-ये सभी कुछ सर्वनामों के चतुर्थी वि. के एकवचन में रूप हैं, पूरे रूप नीचे देखें।

(ख) संज्ञा शब्द- माआ (माता) (स्त्री.), छत्तो (छात्र) (पुं.), धणं (धन) (नपुं.), पुरिसो (पुरुष) (पुं.), सीसो (शिष्य) (पुं.), कुलवइ (कुलपति), (पुं.)।

(ग) क्रिया पद- पाल (पालता है), रक्ख (रक्षा करना), कंद (रोना)

व्याकरण

सर्वनाम शब्दों के चतुर्थी विभक्ति में रूप देखें-

लिंग	**एकवचन**	**अर्थ**	**बहुवचन**	**अर्थ**
	मज्झ	मेरे लिए	अम्हाण	हम सब या हम दोनों के लिए
	तुज्झ	तेरे लिए	तुम्हाण	तुम सब या तुम दोनों के लिए
(पुं.,नपुं.)	तस्स	उसके लिए	ताण	उनके लिए, उन दोनों के लिए
(स्त्री.)	ताअ	उसके लिए	ताण	उनके लिए, उन दोनों के लिए
(पुं.,नपुं.)	इमस्स	इसके लिए	इमाण	इनके लिए, इन दोनों के लिए
(स्त्री.)	इमाअ	इसके लिए	इमाण	इनके लिए, इन दोनों के लिए

सूचना- इसी तरह सव्व और क के रूप बनाना।

संज्ञा शब्दों के लिए चतुर्थी विभक्ति में रूप-

लिंग	**एकवचन**	**बहुवचन**
(पुं.)	छत्तस्स	छत्ताण
(स्त्री.)	माआअ	माआण

सूचनाः-1. नपुं. लिंग के रूप पुंलिंग की तरह ही बनते हैं।

2. इकारान्त, उकारान्त शब्दों के लिए रूप संख्या (7, 8) देखें।

नियम 30-चतुर्थी विभक्ति 'के लिए' अर्थ में होती है। कुछ देने के लिए उपदेश आदि प्रदान करने के लिए चतुर्थी विभक्ति होती है।

नियम 31 - 'णमो' के साथ चतुर्थी विभक्ति होती है।

नियम 32 - इ, उ कारान्त शब्दों के आगे स्त्री. लिंग में दीर्घ होकर ही 'ए' और 'ण' प्रत्यय लगते हैं। जैसे-जुवईए, जुवईण, धेणूए, धेणूण।

नियम 33- चतुर्थी विभक्ति के बहुवचन में अन्त में 'ण' के स्थान पर 'णं' भी होता है।

अभ्यास 3

1. प्रयोग देखें-

यह फल मेरे लिए हैं-इमं फलं मज्झ अत्थि। वह शास्त्र तेरे लिए है–तं सत्थं तस्स (ताअ) अत्थि। माता शिशु के लिए भोजन देती है–माआ सिसुस्स भोजणं दाइ। गुरु छात्र के लिए उपदेश देता है-गुरू छत्तस्स उवदिसइ। बालक जिन को प्रणाम करता है–बालओ जिणं पणमइ। युवतियाँ साड़ी के लिए रो रही हैं–जुवईओ साडीए रूवंति।

2 अभ्यास करें-

(क) वह धन के लिए रोता है। वह वृक्ष के लिए पानी देता है। कवि कुलपति के लिए धन देता है। माता शिशु के लिए होती है। जल नदी के लिए होता है।

(ख) वे साधु के लिए शास्त्र देते हैं। ये घर छात्रों के लिए हैं। वे मनुष्य कुलपति को फल देते हैं। तुम दोनों हम सबके लिए क्यों नमन करती हो? जिनों के लिए नमस्कार है।

3.	**अशुद्ध वाक्य**	**शुद्ध वाक्य**	**नियम**
	धेणुए जलं दाइ	धेणूए जलं दाइ	32
	ते इमाण धणं दाइ	ते इमाण धणं दंति	1
	माअस्स सत्थं संति	माआअ सत्थं अत्थि	रूप देखें, 11
	अहं तुम्हाण वत्थूणि दासि	अहं तुम्हाण वत्थूणि दामि	1
	णमो जिणं	णमो जिणाणं	31

4 शुद्ध करो तथा नियम बताओ-

इमं पुप्फं पुरिसं अत्थि। तत्थ किं वत्थु संति। णमो माआए अत्थि। सीसस्स धणं संति। सा कवीण कमलाणि दांति। इमं घरो तुज्झ णत्थि।

5. गृह कार्य-

- ❖ अभ्यास 2 (क) के वाक्यों को बहुवचन में बनाएँ।
- ❖ अभ्यास 2 (ख) के वाक्यों को एकवचन में बनाएँ।
- ❖ तीनों लिंगों के चतुर्थी के रूप तथा इस अभ्यास के एवं अभ्यास 4 के संज्ञा शब्दों के रूप लिखें।

अभ्यास 4

(क) सर्वनाम शब्द – पंचमी विभक्ति–ममाओ (मुझसे), तुमाओ (तुझसे),

सूचना–अन्य सर्वनामों के रूप नीचे देखें।

(ख) संज्ञा शब्द– गब्भ (गर्भ) (पुं.), उदहि (सागर) (पुं.), सव्वण्णु (सर्वज्ञ) (पुं.), रूवं (रूप)(नपुं.), मसाणं (मरघट)(नपुं.), मेह (मेघ)(पुं.), सायर (सागर)(पुं.)।

(ग) क्रिया पद– वस (रहना), णिवस (निवास करना), तर (तैरना, तरना), जाय (उत्पन्न होना), बीह (डरना), पद (गिरना)।

व्याकरण

सर्वनाम शब्दों के चतुर्थी विभक्ति में रूप देखें–

लिंग	एकवचन	अर्थ	बहुवचन	अर्थ
	ममाओ	मुझसे	अम्हाहिंतो	हम सब से, हम दोनों से
	तुमाओ	तुझसे	तुम्हाहिंतो	तुम सब से, तुम दोनों से

सूचना–इसी तरह सव्व और क के रूप बनाना।

संज्ञा शब्दों के लिए पंचमी विभक्ति में रूप–

लिंग	एकवचन	बहुवचन
(पुं.)	बालअत्तो	बालआहिंतो
(स्त्री.)	बालत्तो	बालाहिंतो

सूचना:–इकारान्त, उकारान्त शब्दों के लिए रूप आगे शब्दरूपों में देखें।

नियम 34–पंचमी विभक्ति 'से' के अर्थ में होती है। जब कोई वस्तु कहीं से अलग हो, उत्पन्न हो, कारण अर्थ में या पढ़ना, तुलना करना, डरना, रक्षा करना आदि अर्थ में हो तो पंचमी वि. होती है।

नियम 35 – (भूतकाल प्रयोग) भूतकाल की क्रिया सभी क्रियापदों में सभी पुरुषों में सभी वचनों में 'ईअ' जोड़ने से बन जाता है। जैसे पढीअ, खेलीअ, चलीअ आदि। यह नियम मात्र अकारान्त क्रियाओं के लिए है।

नियम 36 –आ, ए एवं ओकारान्त क्रियाओं के अन्त में सभी पुरुषों एवं वचनों में 'हीअ' जोड़कर रूप बनते हैं। जैसे–ठाहीअ, होहीअ आदि।

संज्ञा शब्दों में स्त्रीलिंग के इ, उकारान्त शब्दों में पंचमी वि. के एकवचन में दीर्घ नहीं होता है, बहुवचन में होता है।

नियम 37– पंचमी वि. में एक वचन में मूल शब्द में 'आदो' या 'दो' प्रत्यय जुड़कर भी रूप बनते हैं जैसे ववहारादो, णिच्छयदो, णयदो। कहीं पर विभक्ति रहित शब्द का प्रयोग भी होता है। मात्र अंत में दीर्घ स्वर हो जाता है। जैसे ववहारा, णियमा आदि।

अभ्यास 4

1. प्रयोग देखें-

वह मुझसे डरती है–सा ममाओ बीहइ। तुम सबसे डरते हो–तुमं सव्वाओ बीहसि। हम सब तुमसे धन लेते हैं–अम्हे तुमाओ धणं गिण्हामो। मेघ सागर से उत्पन्न होते हैं–मेहा सायरत्तो जायंति। सर्वज्ञ साधु से नहीं पढ़ते हैं–सव्वण्णू साहुत्तो ण पढइ। मैंने पढ़ा–अहं पढीअ। हम सब चले–अम्हे चलीअ। तुम वहाँ गए–तुमं तत्थ गच्छीअ।

2 अभ्यास करें-

(क) वह सागर से डरता है। तुम इन सबसे पढ़ते हो। पानी से नदी बनती है। मैं सागर से तरता हूँ। तुम बाला से माला लेते हो। गाय से धन होता है। गर्भ से शिशु उत्पन्न होता है।

(ख) वे हम दोनों से डरती हैं। वृक्षों से फल गिरते हैं। ज्ञानी भक्ति से आगे जाते हैं। बुद्धिमान सदा पुस्तक से पढ़ते हैं। छात्र मरघट से डरते हैं। बहुएँ सासू से दही ग्रहण करती हैं।

(ग) हमने पढ़ा। तुमने खेला। मैंने पुस्तक को देखा। उन दोनों ने शास्त्र पढ़ा। बालिकाएँ जल से खेलीं। मित्र नगर से आए। हम दोनों प्रातः अच्छी तरह पुस्तकों से पढ़े।

3.

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य	नियम
अहं छत्तात्तो फलं णेइ	अहं छत्तत्तो फलं णेमि	रूप
ताओ सासूहिंतो पढइ	ताओ सासूहिंतो पढंति	1
अहं पढीआ	अहं पढीअ	35
ताओ ठाईआ	ताओ ठाहीअ	36
सा सासुहिंतो पढइ	सा सासूहिंतो पढइ	37

4 शुद्ध करो तथा नियम बताओ-

अहं बालअत्तो पढसि। तुम्हे चलीह। बालाओ ठाईअ। सो सायरं बीहइ। धेणूत्तो धणं होइ।

5. गृह कार्य-

- ❖ अभ्यास 2 (क) के वाक्यों को बहुवचन में बनाएँ।
- ❖ अभ्यास 2 (ख) के वाक्यों को एकवचन में बनाएँ।
- ❖ इस अभ्यास के संज्ञा शब्दों के रूप बनाएँ।

शब्दरूप (संज्ञा एवं सर्वनाम)

1. जिण = जिन / जिनेन्द्र भगवान् (अकारान्त, पुंलिंग)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	जिणो	जिणा
द्वितीया	जिणं	जिणा / जिणे
तृतीया	जिणेण	जिणेहिं
चतुर्थी	जिणस्स	जिणाण, जिणाणं
पंचमी	जिणत्तो	जिणाहिंतो
षष्ठी	जिणस्स	जिणाण, जिणाणं
सप्तमी	जिणे, जिणम्मि	जिणेसु
संबोधन	हे जिण	हे जिणा

2. मित्त = मित्र (अकारान्त, नपुंसकलिंग)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	मित्तं	मित्ताणि
द्वितीया	मित्तं	मित्ताणि
तृतीया	मित्तेण	मित्तेहिं
चतुर्थी	मित्तस्स	मित्ताण, मित्ताणं
पंचमी	मित्तत्तो	मित्ताहिंतो
षष्ठी	मित्तस्स	मित्ताण, मित्ताणं
सप्तमी	मित्तम्मि, मित्ते	मित्तेसु
संबोधन	हे मित्त	हे मित्ताणि

3. बाला = बालिका (आकारान्त, स्त्रीलिंग)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	बाला	बालाओ
द्वितीया	बालं	बालाओ
तृतीया	बालाए	बालाहिं
चतुर्थी	बालाअ	बालाण
पंचमी	बालत्तो	बालाहिंतो
षष्ठी	बालाअ	बालाण, बालाणं
सप्तमी	बालाए	बालासु
संबोधन	हे बाला	हे बालाओ

4. **णाणि = ज्ञानी (इकारान्त, पुंलिंग)**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	णाणी	णाणिणो
द्वितीया	णाणिं	णाणिणो
तृतीया	णाणिणा	णाणीहिं
चतुर्थी	णाणिणो	णाणीण, णाणीणं
पंचमी	णाणित्तो	णाणीहिंतो
षष्ठी	णाणिणो	णाणीण, णाणीणं
सप्तमी	णाणिम्मि	णाणीसु
संबोधन	हे णाणी	हे णाणिणो

5. **वारि = पानी (इकारान्त, नपुंसकलिंग)**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	वारि	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारीहिं
चतुर्थी	वारिस्स	वारीण, वारीणं
पंचमी	वारित्तो	वारीहिंतो
षष्ठी	वारिस्स	वारीण, वारीणं
सप्तमी	वारिम्मि	वारीसु
संबोधन	हे वारि	हे वारीणि

6. **जुवई = युवती (इकारान्त, स्त्रीलिंग)**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	जुवई	जुवईओ
द्वितीया	जुवइं	जुवईओ
तृतीया	जुवईए	जुवईहिं
चतुर्थी	जुवईओ	जुवईण/जुवईणं
पंचमी	जुवइत्तो	जुवईहिंतो
षष्ठी	जुवईओ	जुवईण/जुवईणं
सप्तमी	जुवईए	जुवईसु
संबोधन	जुवइ	जुवईओं

7. **गामणी = ग्रामणी (ईकारान्त, पुंलिंग)**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	गामणी	गामणिणो
द्वितीया	गामणिं	गामणिणो
तृतीया	गामणिणा	गामणीहिं
चतुर्थी	गामणिस्स	गामणीण, गामणीणं
पंचमी	गामणित्तो	गामणीहिंतो
षष्ठी	गामिणिस्स	गामणीण, गामणीणं
सप्तमी	गामिणिम्मि	गामणीसु
संबोधन	हे गामणि	हे गामणी

8. **णई = नदी (ईकारान्त, स्त्रीलिंग)**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	णई	णईओ
द्वितीया	णइं	णईओ
तृतीया	णईए	णईहिं
चतुर्थी	णईआ	णईण/णईणं
पंचमी	णइत्तो	णईहिंतो
षष्ठी	णईआ	णईण/णईणं
सप्तमी	णईए	णईसु
संबोधन	णइ	णईसु

9. **त = वह (पुंलिंग)**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	सो	ते
द्वितीया	तं	ते
तृतीया	तेण	तेहि
चतुर्थी	तस्स	ताण/ताणं
पंचमी	ताओ	ताहिंतो
षष्ठी	तस्स	ताण/ताणं/तेसिं
सप्तमी	तम्मि	तेसु

10. **त = वह (स्त्रीलिंग)**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	सा	ताओ
द्वितीया	तं	ताओ
तृतीया	ताए	ताहि
चतुर्थी	ताअ	ताण/ताणं
पंचमी	तत्तो	ताहिंतो
षष्ठी	ताअ	ताण/ताणं/तासिं
सप्तमी	ताए	तासु

11. **त = वह (नपुंसकलिंग)**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	ते	ताणि
द्वितीया	तं	ताणि
तृतीया	तेण	तेहि
चतुर्थी	तस्स	ताण/ताणं
पंचमी	ताओ	ताहिंतो
षष्ठी	तस्स	ताण/ताणं
सप्तमी	तम्मि	तेसु

12. **अहं = मैं (सर्वनाम)**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	अहं	अम्हे
द्वितीया	ममं	अम्हे
तृतीया	मए	अम्हेहि
चतुर्थी	मज्झ	अम्हाण / अम्हाणं
पंचमी	ममाओ	अम्हाहिंतो
षष्ठी	मज्झ	अम्हाण / अम्हाणं
सप्तमी	अम्हम्मि	अम्हेसु

13. **तुमं = तुम (सर्वनाम)**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	तुमं	तुम्हे
द्वितीया	तुमं	तुम्हे
तृतीया	तुमए	तुम्हेहि
चतुर्थी	तुज्झ	तुम्हाण / तुम्हाणं
पंचमी	तुमाओ	तुम्हाहिंतो
षष्ठी	तुज्झ	तुम्हाण / तुम्हाणं
सप्तमी	तुम्हम्मि	तुम्हेसु

14. **इम = यह (पुंलिंग)**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	इमो	इमे
द्वितीया	इमं	इमे
तृतीया	इमेण	इमेहि
चतुर्थी	इमस्स	इमाण/इमाणं
पंचमी	इमाओ	इमाहिंतो
षष्ठी	इमस्स	इमाण/इमाणं
सप्तमी	इमम्मि	इमेसु

15. **इम= यह (स्त्रीलिंग)**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	इमा	इमाओ
द्वितीया	इमं	इमाओ
तृतीया	इमाए	इमाहि
चतुर्थी	इमाअ	इमाण/इमाणं
पंचमी	इमत्तो	इमाहिंतो
षष्ठी	इमाअ	इमाण/इमाणं
सप्तमी	इमाए	इमासु

16. **इम = यह (नपुंसकलिंग)**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	इमं	इमाणि
द्वितीया	इमं	इमाणि
तृतीया	इमेण	इमेहि
चतुर्थी	इमस्स	इमाण/इमाणं
पंचमी	इमाओ	इमाहिंतो
षष्ठी	इमस्स	इमाण/इमाणं
सप्तमी	इमम्मि	इमेसु

क्रियापद रूप

1. **हस = हँसना (वर्तमान काल)**

	एकवचन	**बहुवचन**
अन्यपुरुष	हसइ	हसंति
मध्यमपुरुष	हससि	हसह
उत्तमपुरुष	हसामि	हसामो

2. **हस = हँसना (भविष्यत्काल)**

	एकवचन	**बहुवचन**
अन्यपुरुष	हसिहिइ	हसिहिंति
मध्यमपुरुष	हसिहिसि	हसिहिह
उत्तमपुरुष	हसिहिमि	हसिहिमो

3. **हस = हँसना (भूतकाल)**

	एकवचन	**बहुवचन**
अन्यपुरुष	हसीअ	हसीअ
मध्यमपुरुष	हसीअ	हसीअ
उत्तमपुरुष	हसीअ	हसीअ

4. **हस = हँसना (विधि एवं आज्ञावाचक)**

	एकवचन	**बहुवचन**
अन्यपुरुष	हसउ	हसंतु
मध्यमपुरुष	हसहि	हसइ
उत्तमपुरुष	हसमु	हसमो

5. **ठा = ठहरना (वर्तमान काल)**

	एकवचन	**बहुवचन**
अन्यपुरुष	ठाइ	ठंति
मध्यमपुरुष	ठासि	ठाह
उत्तमपुरुष	ठामि	ठामो

6. **ठा = ठहरना (भूतकाल)**

	एकवचन	**बहुवचन**
अन्यपुरुष	ठाहीअ	ठाहीअ
मध्यमपुरुष	ठाहीअ	ठाहीअ
उत्तमपुरुष	ठाहीअ	ठाहीअ

7. **ठा = ठहरना (भविष्यत्काल)**

	एकवचन	**बहुवचन**
अन्यपुरुष	ठाहिइ	ठाहिंति
मध्यमपुरुष	ठाहिसि	ठाहिह
उत्तमपुरुष	ठाहिमि	ठाहिमो

8. **ठा = ठहरना (विधि एवं आज्ञावाचक)**

	एकवचन	**बहुवचन**
अन्यपुरुष	ठाउ	ठंतु
मध्यमपुरुष	ठाहि	ठाह
उत्तमपुरुष	ठामु	ठामो

9. **हो = होना (वर्तमान काल)**

	एकवचन	**बहुवचन**
अन्यपुरुष	होइ	होंति
मध्यमपुरुष	होसि	होह
उत्तमपुरुष	होमि	होमो

10. **हो = होना (भूतकाल)**

	एकवचन	**बहुवचन**
अन्यपुरुष	होहीअ	होहीअ
मध्यमपुरुष	होहीअ	होहीअ
उत्तमपुरुष	होहीअ	होहीअ

11. **हो = होना (भविष्यत्काल)**

	एकवचन	**बहुवचन**
अन्यपुरुष	होहिइ	होहिंति
मध्यमपुरुष	होहिसि	होहिह
उत्तमपुरुष	होहिमि	होहिमो

12. **हो = होना (विधि एवं आज्ञावाचक)**

	एकवचन	**बहुवचन**
अन्यपुरुष	होउ	होंतु
मध्यमपुरुष	होहि	होह
उत्तमपुरुष	होमु	होमो

संज्ञा शब्दज्ञान

(इ, ई, उ, ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्द)

जुवइ	–	युवती
मणि	–	मणि, रत्न
भत्ति	–	भक्ति
दित्ति	–	दीप्ति
सति	–	स्मृति
मइ	–	मति, बुद्धि
णई	–	नदी
साडी	–	साड़ी
जिणवाणी	–	जिनवाणी
धेणु	–	गाय
तणु	–	शरीर
बहू	–	बहू
सासू	–	सास

क्रियापद ज्ञान

क्रियापद (अकारान्त)

कोक्क (सक.)	–	बुलाना
जीव (अक.)	–	जीना
उच्छल (अक.)	–	उछलना
वंद (सक.)	–	वंदना करना
कलह (अक.)	–	कलह करना
पाल (सक.)	–	पालन करना
रक्ख (सक.)	–	रक्षा करना
कंद (अक.)	–	रोना
वस (अक.)	–	रहना
णिवस (अक.)	–	निवास करना
तर (सक.)	–	तैरना
जाय (अक.)	–	उत्पन्न होना
बीह (अक.)	–	डरना
विहर (सक.)	–	विहार करना
लंभ (सक.)	–	प्राप्त करना
सक्क (अक.)	–	समर्थ होना
धोव (सक.)	–	धोना
कर (सक.)	–	करना
मुण (सक.)	–	जानना
थुण (सक.)	–	स्तुति करना

प्रकारवाचक क्रियाविशेषण अव्यय

सम्मं	=	भली प्रकार
इत्थं	=	इस प्रकार
एवं	=	इस प्रकार
जहा/जह	=	जिस प्रकार
तहा/तह	=	उस प्रकार
तहेव	=	उसी प्रकार
जहेव	=	जिस प्रकार
सणिअं	=	धीरे-धीरे
अण्णहा	=	अन्यथा
जह-तहा	=	जैसे-तैसे
कहं/कह	=	किस प्रकार
बहुसो	=	बहुत प्रकार से
बहुहा	=	प्रायः

लेस्साणाम

(लेश्या के नाम)

कृष्ण लेश्या	-	किण्ह लेस्सा
नील लेश्या	-	णील लेस्सा
कापोत लेश्या	-	काउ लेस्सा
पीत लेश्या	-	पीद लेस्सा
पद्‌म लेश्या	-	पम्म लेस्सा
शुक्ल लेश्या	-	सुक्क लेस्सा

दसधम्माणं णामाइं

(दस धर्म के नाम)

उत्तम क्षमा धर्म	-	उत्तम खमा धम्म
उत्तम मार्दव धर्म	-	उत्तम मद्दव धम्म
उत्तम आर्जव धर्म	-	उत्तम अज्जव धम्म
उत्तम शौच धर्म	-	उत्तम सोच धम्म
उत्तम सत्य धर्म	-	उत्तम सच्च धम्म
उत्तम संयम धर्म	-	उत्तम संजम धम्म
उत्तम तप धर्म	-	उत्तम तव धम्म
उत्तम त्याग धर्म	-	उत्तम चाग धम्म
उत्तम आकिंचन धर्म	-	उत्तम आकिंचण धम्म
उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म	-	उत्तम बह्मचेर धम्म

आइरियाणं णामाइं

(आचार्यों के नाम)

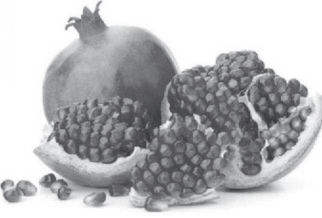
आचार्य धारसेन	-	आइरिय धरसेण
आचार्य पुष्पदंत	-	आइरिय पुप्फदंत
आचार्य भूतबली	-	आइरिय भूदबली
आचार्य कुंदकुंद	-	आइरिय कुंदकुंद
आचार्य उमास्वामी	-	आइरिय उमासामी
आचार्य समंतभद्र	-	आइरिय समंतभद्द
आचार्य पूज्यपाद	-	आइरिय पुज्जपाद
आचार्य जिनसेन	-	आइरिय जिणसेण
आचार्य वीरसेन	-	आइरिय वीरसेण
आचार्य प्रभाचंद्र	-	आइरिय पहाचंद

गंथाणं णामाइं

(ग्रन्थों के नाम)

षट्‌खंडागम	-	छक्खंडागम
कषायप्राभत	-	कसायपाहुड
समयसार	-	समयसार
प्रवचनसार	-	पवयणसार
पंचास्तिकाय	-	पंचात्थिकाय
तत्त्वार्थसूत्र	-	तच्चवत्थ सुत
त्रिलोक प्रज्ञप्ति	-	तिलोयपण्णत्ति
द्रव्य संग्रह	-	दव्व संगह
कार्तिकेय अनुप्रेक्षा	-	कात्तिगेय अणुवेक्खा
धर्मकथा	-	धम्मकहा
तीर्थंकर भावना	-	तित्थयर भावणा

हरे फल

 आम - आमं	 केला - कदलीफलं	 तरबूज - मालिंदं
 अनार - दाड़िमं	 नारियल - णारिएलं	 नाश्पाती–आमियफलं
 अमरूद - दिढबीजं	 संतरा - संतप्पकं	 सेब - सेवं

हरे फल



आम – आमं



केला – कदलीफलं



तरबूज – मालिंदं



अनार – दाड़िमं



नारियल – णारिएलं



नाश्पाती–आमियफलं



अमरूद – दिढबीजं



संतरा – संतप्पकं



सेब – सेवं

आधुनिक उपकरणों के नाम



कम्प्यूटर – संगणगं



मोबाइल–चलदूरभासजंतं



टेलीविजन – दूरदंसणं

आचार्य अकलंक देव जैन विद्या शोधालय समिति, उज्जैन (म.प्र.)

109, शिवाजी पार्क, देवास रोड, उज्जैन (म.प्र.)

दूरभाष : 0734-2519071, 2518396, मोबाइल : -9406881001, -9214894212, 09413423811

प्राकृत विद्या पाठ्यक्रम

फोटो

-: प्रवेश-आवेदन पत्र :-

1. आवेदन कर्ता : ....
2. पिता का नाम : ....
3. माता का नाम : ....
4. जन्म-तिथि एवं स्थान : ....
5. लौकिक शिक्षा (प्रमाण पत्र संलग्न करें) : ....
6. पत्राचार का पता : ....
7. स्थाई पता (मो.नं. सहित) : ....

: ....

: ....

विशेष सूचना : यदि आप सामाजिक स्तर पर मन्दिर या धर्मशाला में "**प्राकृत विद्या**" बच्चों को पढ़ाने के इच्छुक हैं तो "**प्राकृत विद्या पाठशाला**" के माध्यम से आप उसे सुचारू रूप से चला सकते हैं।

प्राकृत विद्या पाठ्यक्रम की अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :-

डॉ० अजेश जैन शास्त्री, रेवाड़ी (हरियाणा)

मो. नं. 9416426659, 9784601548

‘जेण्हं जयउ सासणं’

पाइयभासा पसारद्वं उवाया

(प्राकृत भाषा प्रचार के उपाय)

णवपाठसालाए णामं ‘पाइयविज्जापाठसाला’ इदि रक्खेदव्वा।
नई पाठशाला का नाम ‘प्राकृत विद्या पाठशाला’ रखना चाहिए।

पुव्वसंचालिद-पाठसालाए पाइयविज्जापाठकम्मो पढावेदव्वो।
पहले से संचालित पाठशाला में प्राकृत विद्या पाठ्यक्रम पढ़ाना चाहिए।

सुदपंचमीदिवसो पाइयभासादिवसरूवेण करिदव्वो।
श्रुतपंचमी दिन को प्राकृतभाषा दिवस के रूप में करना चाहिए।

पाइयभासाए परोप्परं वत्तालावो कादव्वो।
प्राकृत भाषा में परस्पर वार्तालाप करना चाहिए।

वरिसे एगदिणं पाइयभासाए मंचणं अवस्सं कादव्वं।
वर्ष में एक दिन प्राकृत भाषा में मंचन अवश्य करना चाहिए।

पाइयभासाए पुत्तगिहादीणं णामं रक्खिदव्वं।
प्राकृत भाषा में पुत्र, घर आदि का नाम रखना चाहिए।

पाइयभासाए णामोच्चारणं कादव्वं।
प्राकृत भाषा में नामोच्चार करना चाहिए।

पाठसालाए पाइयभासाए सुभासिदं पट्टे रचावेदव्वं।
पाठशाला में प्राकृत भाषा में सुभाषित पट्ट (बोर्ड) पर लिखना चाहिए।

जिणागमस्स मूलभासा पाइयभासा अत्थि तेण पाइयभासाए रक्खणेण जिणागमस्स रक्खा कादव्वा।
जिनागम की मूलभाषा प्राकृत भाषा है इसलिए प्राकृतभाषा की रक्षा से जिनागम की रक्षा करना चाहिए।

पत्राचार माध्यम

प्राकृत विद्या पाठ्यक्रम के अंतर्गत

पाइय सिक्खा

(प्राकृत शिक्षा)

भाग - 4

लेखक

मुनि प्रणम्यसागर

प्राकृत विद्या पाठ्यक्रम के अंतर्गत

पाइय सिक्खा

(प्राकृत शिक्षा)

भाग - 3

लेखक

मुनि प्रणम्यसागर

प्राकृत विद्या पाठ्यक्रम के अंतर्गत

पाइय सिक्खा

(प्राकृत शिक्षा)

भाग - 2

लेखक

मुनि प्रणम्यसागर

प्राकृत विद्या पाठ्यक्रम के अंतर्गत

पाइय सिक्खा

(प्राकृत शिक्षा)

भाग - 1

लेखक

मुनि प्रणम्यसागर

आओ पढ़ाएं...
सबको बढ़ाएं

प्रकाशक :

आचार्य अकलंक देव जैन विद्या शोधालय समिति

देवास रोड, उज्जैन (476010)



978-81-934860-2-3